मिलर महथा आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी

स्नातक प्रथम खण्ड/द्वितीय पत्र
हिन्दी प्रतिष्ठा

राम नारायण प्रसाद
दिनांक 31-07-2020

विद्यापति की श्रृंगारिक-भावना

विद्यापति का जन्म दरभंगा जिला के अन्तर्गत बेनीपट्टी के बिसपी गाँव में हुआ था। कहा जाता है कि यह गाँव विद्यापति के आश्रयदाता राजा शिवसिंह द्वारा उपहार स्वरूप मिला था। इसके साक्ष्य में एक ताम्रपत्र भी उलब्ध है मैथिल - कोकिल विद्यापति ग्रंथ के रचयिता बाबू ब्रजनन्दन सहाय ने यह तथ्य दिया कि विसपी गाँव प्राप्त करने के समय विद्यापति की अवस्था केवल २० वर्ष की थी। इनके पिता का नाम पंडित गणपति ठाकुर था जो राजा गणेश्वर के सभा पंडित थे। इनकी माता का नाम हांसिनी देवी था। विद्यापति ने हरिमिश्र से विद्याध्ययन किया था। राजा गणेश्वर के बाद कीर्तिसिंह राजगद्दी पर बैठे। विद्यापति पहले से ही पिता के साथ दरबार जाया करते थे विद्यापति ने अपनी पहली पुस्तक 'कीर्तिलता' है। इसके प्रथम पल्लव ने लिखा है।

"देसिल बअना सब जन मीट्ठा।"
ते तैसन जम्पओं अवहट्ठा॥"

भाषा की मिठासतो तो विद्यापति की रचना में देखी जा सकती है विद्यापति की दूसरी रचना 'भू- परिक्रमा'। यह देवसिंह की आज्ञा से लिखी गई थी। इसमें नैतिक कहानियाँ संकलित है इसका वृहद रूप "पुरुष - परीक्षा" है इनकी चौथी पुस्तक कीर्तिपताका है इसमें मैथिली में लिखी गई प्रेम कविताएँ है। पाँचवी पुस्तक 'लिखनावली' है जिसमें संस्कृत में पत्र व्यवहार की विधि बताई गई है। छठी पुस्तक 'शैव - सर्वस्व - सार' है। सातवीं पुस्तक गंगा वाक्यवलि तथा आठवीं पुस्तक 'दान वाक्यावलि' है। इसके अलावा इन्होंने 'दुर्गाभक्ति तरंगिनी', विभाग सार (स्मृति ग्रंथ), वर्षकृत्य और 'गया-पतन' (संस्कृत में) रचना की है। पदावली उनकी प्रसिद्ध पुस्तक है। विद्यापति श्रृंगारिक कवि है। इस सम्बंध में पं० राम चन्द्र शुक्ल, डॉ उमेश मिश्र, डॉ बाबू राम सक्सेना,

डॉ आनंद प्रकाश दीक्षित आदि ने उन्हें शृंगारिक कवि सिद्ध किया है।

पं रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है - विद्यापति के पद अधिकतर शृंगार के ही हैं जिनमें नायिका और नायक राधा - कृष्ण है "डॉ उमेश मिश्र ने लिखा है जितनी कविताएँ राधा कृष्ण को लेकर कवि ने बनाई हैं प्राय: सभी शृंगारिक है और कवि ने संसार के स्त्री - पुरुष को राधा कृष्ण के नाम से अन्योक्ति रूप में सभी बातों का संग्रह अपने पदों के अध्ययन से पता लगता है कि वे बड़े शृंगारी कवि थे इन पदों में राधा - कृष्ण की भक्ति पर आरोपित करना पद पदार्थ के प्रति अन्याय है। कवि विद्यापति के रसिक होने का परिचय उनके ग्रन्थ कीर्तिलता पढ़ने से ही हो जाता है।"

विद्यापति के आराध्यदेव श्री कृष्ण थे। कृष्ण के साथ राधा को जोड़कर जिन पदों की रचना विद्यापति ने की है वह भक्ति कम और शृंगार भावना अधिक दिखाई पड़ती है। उन्होंने यौवन के अत्यंत मनोरम चित्र उपस्थित किए हैं। ये चित्र मांसल स्वस्थ और मनोरम हैं विद्यापति ने नायिक के नख-शिख, सद्य: स्नाता, मानवती, अभिसारिका और विरह - व्यथा आदि को विभिन्न रूपों में उपस्थित किया है।

विद्यापति ने स्थूल शृंगार का वर्णन किया है संस्कृत साहित्य की शृंगारिक रचना का प्रभाव भी विद्यापति पर पड़ा है। राज्याश्रित कवि होने के कारण उनकी रचनाओं का प्रतिपाद्य शृंगार ही रहा। यह परिस्थिति के अनुरूप हुआ।

17.4.2020

राम नारायण प्रसाद